श्लोकसंख्या -20 18-7-2020

"न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायं भूत्वाऽभविता वा न भूयः।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे ॥"

हिन्दी अनुवाद -

यह आत्मा न तो कभी जन्म लेता है, न ही मरता है, न ही जन्म लेकर अभाव को प्राप्त करता है। अजन्मा, नित्य (अमर), शाश्वत (अक्षय) (~~ध्रुव~~) तथा पुरातन यह आत्मा इस मृत्यु को प्राप्त होनेवाले शरीर में नहीं मारा जाता है।

(शाङ्करभाष्य के आश्रय से)

भावार्थ - प्रस्तुत श्लोक में भगवान् श्रीकृष्ण नित्य आत्मा के निर्विकार होने का प्रतिपादन करते हैं। आत्मा उत्पन्न नहीं होता अर्थात् इसमें उत्पत्तिरूप से विकार का आगमन नहीं होता। इस ~~यह~~ आत्मा में मृत्युरूपी विकार भी नहीं होता। 'वा' शब्द चार्थक है। भावपदार्थों में होनेवाले छह विकारों में मृत्यु अन्तिम विकार है। 'न वा म्रियते' द्वारा आत्मा में अन्तिम विकार का निषेध किया गया है।

चूँकि आत्मा का जन्म नहीं होता है, अतएव वह अज है। आत्मा मरता नहीं है, अतएव यह नित्य है। षड्भावविकारों में प्रथम तथा अन्तिम विकारों का निषेध करने से आत्मा में अन्य सभी विकारों का प्रतिषेध हो जाता है।

श्लोक के शाश्वत पद द्वारा आत्मा में अपक्षय नामक विकार का निषेध किया गया है। शाश्वत - व्युत्पत्ति - शश्वत् भवः। जो वस्तु हमेशा रहे, उसे शाश्वत कहते हैं। आत्मा निरवयव तथा निर्गुण है। अतएव गुणक्षय द्वारा आत्मा का अपक्षय नहीं होता।

~~स्वभाव~~ पुराण - 'पुरा अपि नवः'। वृद्धि नामक विकार का आत्मा में निषेध करते हुए भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं - पुराण इति। पुराण होने के कारण आत्मा में वृद्धि नामक विकार नहीं होता है।

इसप्रकार आत्मा सकल विकारों से रहित है। जो लोग आत्मा को हनन क्रिया का कर्ता अथवा कर्म सोचते हैं, वे आत्मा के स्वरूप को नहीं जानते।